ललित निबंध संगोष्ठी में हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र के लेखन पर चर्चा

हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध वैचारिक थे वहीं विद्यानिवास मिश्र जी के निबंध भावनात्मक थे. विवेकी राय ने अपने निबंधों में ग्राम्य जीवन और आंचलिकता को पिरोया तो कुबेरनाथ राय के निबंध भारतीय संस्कृति के गूढ़ रहस्यों तक गए.

साहित्य अकादमी द्वारा 'ललित निबंध: स्वरूप एवं परंपरा' विषय पर आयोजित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी

नई दिल्ली: साहित्य अकादमी द्वारा 'ललित निबंध: स्वरूप एवं परंपरा' विषय पर आयोजित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का समापन हो गया. दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक अरुणेश नीरन ने की और विद्याविंदु सिंह एवं मंजरी चतुर्वेदी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए. मंजरी चतुर्वेदी ने 'ललित निबंध परंपरा: पूर्वरंग' विषय पर बोलते हुए कहा कि ललित निबंधों में गीतों जैसी लय होती है और उसमें विचारों का विस्तार दृष्टव्य है.

चतुर्वेदी ने हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय और विवेकी राय के ललित निबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि जहाँ हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध वैचारिक थे वहीं विद्यानिवास मिश्र जी के निबंध भावनात्मक थे. विवेकी राय ने अपने निबंधों में ग्राम्य जीवन और आंचलिकता को पिरोया तो कुबेरनाथ राय के निबंध भारतीय संस्कृति के गूढ़ रहस्यों तक गए.

हिंदी साहित्य के इन चारों चर्चित ललित निबंधकारों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इन्होंने भाषा का जो नया संसार रचा है, उसको बचाए रखना नई पीढ़ी के लिए चुनौती होगी, विद्याविंदु सिंह ने अपना आलेख विद्यानिवास मिश्र के रचना-संसार पर केंद्रित करते हुए कहा कि विद्यानिवास मिश्र में जड़ों से जुड़ने की प्रबल इच्छा थी, उन्होंने उनके कई व्यक्तिव्यंजक निबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि उनके निबंधों की विशेषता यह है कि वह उसे संवेदना के शिखर तक पहुँचाकर नाटकीय मोड़ देते हैं जिसके कारण पाठकों की रुचि अंत तक बनी रहती है.

अध्यक्षीय वक्तव्य में अरुणेश नीरन ने हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय के साथ अपने आत्मीय संबंधों को याद करते हुए कहा कि ये तीनों ही दृश्य और उसके पीछे अदृश्य की अनुगूँज, पीड़ा, उल्लास आदि को भी अपनी पैनी नज़र से पकड़ लेते थे. इन तीनों का रचना संसार इतना वैविध्यपूर्ण और व्यापक है कि आने वाली कई पीढ़ियों के लिए यह प्रेरणा का काम करता रहेगा.

दिन का दूसरा सत्र 'ललित निबंध परंपरा: उत्तर रंग' विषय पर केंद्रित था. विवेक दुबे ने वर्तमान पीढ़ी के ललित निबंधकारों श्यामसुंदर दुबे, श्रीराम परिहार एवं अष्टभुजा शुक्ल का उल्लेख करते हुए कहा कि इनके ललित निबंधों में हम उत्तर परंपरा की सांस्कृतिक चेतना के विविध आयामों को देख सकते हैं. उन्होंने वर्तमान परिवेश और वैश्विक परिवेश की तुलना करते हुए कहा कि बदलते संदर्भों में हमें अपने लेखन में इन सबसे उपजी चुनौतियों का सामना करना होगा.

हूबनाथ पांडेय ने कुबेरनाथ राय, नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, कृष्णकुमार मिश्र के ललित निबंध लेखन का ज़िक्र करते कहा कि इन लेखकों ने हमारी परंपरा को जीवित रखा है लेकिन आने वाले समय में इस विधा के लिए पाठक जुटाना और निबंधों को प्रकाशित करवा पाना बहुत मुश्किल होगा. उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए भी है क्योंकि हमारे वर्तमान रचनाकारों ने अपने को उपनिवेशवाद के सामने लगभग समर्पित कर दिया है.

इस सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में माधवेंद्र पांडेय ने कहा कि मैं उत्तर आधुनिकता एवं वर्तमान परिस्थितियों में ललित निबंध की चर्चा करते हुए कहना चाहता हूँ कि यह विधा साहित्य में लगभग अनुपस्थित है. आज जब सारा परिवेश ही लालित्य का विरोधी है तो ललित निबंध लेखन कैसे अपना स्थान बनाए रख सकेगा? आगे उन्होंने कहा कि उत्तर आधुनिकता का पहला हमला लोक पर होता है जबकि ललित निबंध का मुख्य स्रोत ही लोक है. उन्होंने ललित निबंध के सभी मूल तत्त्वों के आप्रासांगिक होते जाने पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि इनको बचाना बेहद ज़रूरी है.

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया. इस कार्यक्रम में साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक एवं हिंदी परामर्श मंडल के सदस्य कमल किशोर गोयनका, सुरेश ऋतुपर्ण, अरुण कुमार भगत तथा बड़ी संख्या में अन्य साहित्यकार उपस्थित थे.